वर्ष 4 अंक 38
नवंबर, 2018 • मूल्य : 25/- रुपए

जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

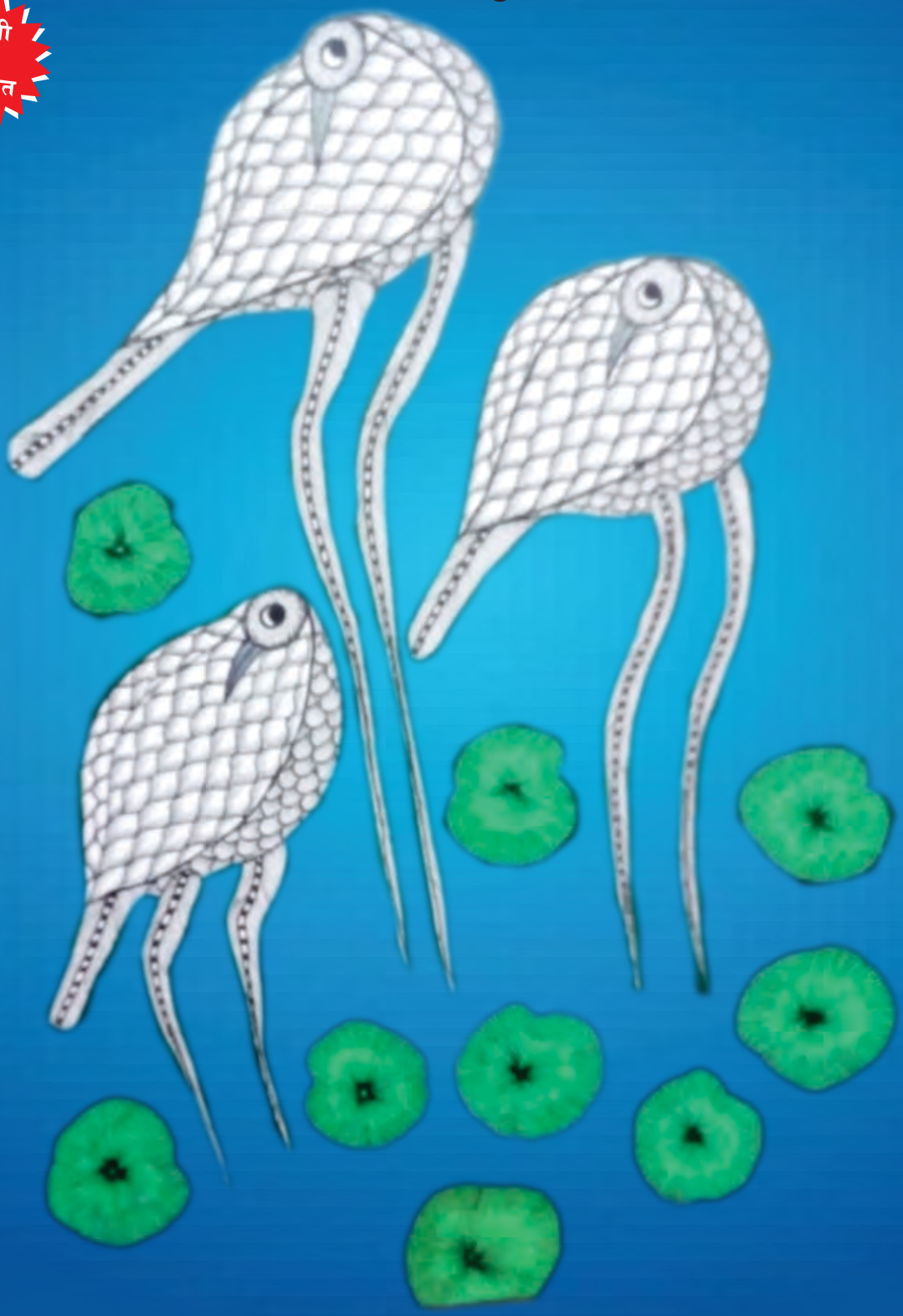

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

नवंबर 2018 • वर्ष-4 • अंक-38

प्रबंधक एवं परामर्श संपादक

कुसुमलता सिंह

संपादक

डॉ. राजाराम त्रिपाठी

वरिष्ठ संपादक

प्रो. तत्याना ओरांस्कया, हरिराम मीणा, ए.बी. दुबे 'दीप्त', शैलेन्द्र मौर्या, संजय जगताप, राजीव रंजन प्रसाद, पूनम श्रीवास्तव कुदैसिया, शिप्रा त्रिपाठी, श्रीराजेश

संयुक्त संपादक

बी.एन.आर. नायडू, सुरेंद्र रावल, उमेश कुमार मण्डावी, अपर्णा द्विवेदी, पी.के. तिवारी, राजेंद्र सगर, मधु तिवारी

संपादकीय समर्थन

अखिलेश त्रिपाठी, शशांक शेंडे, जसमति नेताम

विज्ञापन एवं प्रसार

अनुराग त्रिपाठी, ज़मील खान, विवेक त्रिपाठी, ऋषिराज

कानूनी सलाहकारः **फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी**

ग्राफिक डिजाईनः **रोहित आनंद (लिटिल बर्ड)**

कम्पोजिंगः **आनंद कुमार**

संपादकीय कार्यालयः **151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोंडागाँव, छ.ग.-494226**

रायपुर कार्यालय प्रतिनिधि

हर्बल इस्टेट, जी-14, अग्रसेन नगर, रिंग रोड नं.-1, रायपुरा, रायपुर-492013 छ.ग.

रायबरेली कार्यालय प्रतिनिधिः **169-'क'-शिवाजी नगर 1, नियर आई.टी.आई. कॉलोनी, रायबरेली-229401 उ.प्र.**

मुख्य कार्यालय एवं रचनाएं भेजने का पता

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई-पी- एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 011-22728461, 09968288050, 09425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

बेबसाइट : www.kaksaad.in

*मूल्य : रु.**25** (एक प्रति), वार्षिक : रु.**350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : रु.**500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : रु.**3000/-** संस्था : रु.**5000/-***

इस अंक में.....

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

5. प्रख्यात संथाली साहित्यकार और राजनीतिज्ञ **पृथ्वी मांझी** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत

परिचर्चा

7. ककसाड़ की यात्रा के तीन वर्ष पूरे होने पर

उजला कोना

11. गोपाल राम गहमरी : **कुसुमलता सिंह**

धरोहर

12. गुप्त कथा

कभी-कभी

33. उजाले उनकी यादों के : **मधु तिवारी**

लोक कला

43. सांझी कला : **कुमारी अर्चना**

लेख

9. आदिवासी विमर्श अस्तित्व... : **शैलेंद्र मौर्या**
13. समकालीन जीवन और महात्मा गांधी : **गिरीश्वर मिश्र**
15. अंडमान के आदिवासी : **रमेश कुमार**
21. विविध बोलियों और भाषाओं... : **रामचन्द्र राय**
31. झारखंड का टुसू पर्व : **प्रदीप कुमार शर्मा**
41. लिखने की छटपटाहट अभी शेष है! : **गिरधारी विजय 'अतुल'**
44. सामाजिक समरसता और... : **अवधेश कुमार चन्सौलिया**

कहानी

18. क्रॉस कनेक्शन : **स्वाति श्वेता**
28. बनफूल : **छाया सिंह**
34. सिखेड़ा जट की वह गली : **राजगोपाल सिह वर्मा**
39. परागा क्यों हंसी : **कृष्णा श्रीवास्तव**

कविताएं/ग़ज़लें/यादें

22. सुप्रिया सिंह 'वीणा' 23. राघवचेतन राय 24. ओम ठाकुर 24. प्रदीप बहराइची 25. शाह अब्दुल अलीम 'आसी' ग़ाज़ीपुरी

लघुकथा/कहावतें

20. बदहज़मी **: सीताराम गुप्ता** 27. **कहावतें**

व्यंग्य

26. मरणोपरांत पुरस्कार **: सुरेन्द्र रावल**
47. कंक्रीट के जंगलों में बाज और अबाबील **: अनीता यादव**
47. **क्या है ककसाड़?**

पुस्तक समीक्षा

48. व्यंग्य की मुखर आवाज अट्टहास
49. **सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सामाचार**

आवरण चित्र -- द्वारिका परास्ते

गोंड आदिवसी कलाकार **मो.** 097547-81409

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली **'ककसाड़'** पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं। • **ककसाड़** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। • सारे भुगतान मनीआर्डर : चेक/ बैंक ड्राफ्ट **ककसाड़** के नाम से किए जाएं।

संपादकीय

साहित्य सृजन की केन्द्रीय कल्पनाओं के विभिन्न केन्द्र रहे हैं किंतु प्रकृति, मनुष्य, ऐन्द्रिक व अतिन्द्रिय ज्ञान, अनुभव तथा परिकल्पनाएं साहित्य की सृजन की मूल प्रेरणा रही हैं। साहित्य सृजन के शुरुआती दौर में 'प्रकृति' तथा 'मानव' साहित्य के केन्द्र में था। भारतीय वैदिक वांगमय ऋगवेद की सैकड़ों ऋचाएं सूर्योदय,निशा, उषा की किरण, मरुदेव कृत बादल,कड़कती बिजली, बज्र, रोशनी की किरणें आदि प्रकृति के ही विभिन्न रूपों की लयबद्ध दार्शनिक व्याख्या तथा प्रार्थना से समृद्ध है। ईश लीलाएं, उनकी प्रार्थना, ईश महात्म्य आदि भी एक समृद्ध साहित्य सृजन के केन्द्र बिंदु हुआ करते थे। भौतिक विकास यात्रा में अब हम उस पड़ाव पर हैं जहां कि समस्त सृजन का नाभिक केन्द्र मनुष्य ही है। सामाजिक परिवर्तन के साथ ही साहित्य सृजन के प्रेरक तत्व भी परिवर्तित होते रहे हैं। भक्ति काल की निर्गुण-सगुण शाखा, रीतिकालीन प्रेम-विरह तथा सौन्दर्य शास्त्र की ओर उन्मुख हो गई पर यह धारा वहीं रुकी नहीं, उसने शीघ्र ही राजनीतिक चेतना पर सवार होकर, साहित्य सृजन के नए केन्द्र ढूंढ़ लिए।

21वीं सदी के पहले दशक के अंत का साहित्य एकदम नये तरह के चिंतन तथा नवीन जीवन मूल्यों का वाहक बन चुका है। दरअसल सारा विश्व जिस विश्वव्यापी बाजारवाद तथा भूमंडलीकरण से गुजर रहा है उसमें नित नए आदर्श गढ़े जा रहे हैं। नये जीवन मूल्यों तथा प्रतिमानों को सायास स्थापित किया जा रहा है। वर्तमान साहित्य जाने अथवा अनजाने इन प्रक्रियाओं का सहायक और संवाहक बन गया है। इन परम शक्तिशाली प्रक्रियाओं के बीच कोढ़ में खाज की तरह बहुस्तरीय राजनीति सर्वत्र व्याप्त हो गई है। मानव मात्र के लिए अतीत दूर का विषय हो गया है। यह समस्त प्रक्रियायें और सारा आयोजन 'बहुजन हिताय' के नाम पर सक्रिय ताकतें कर रही हैं और इसका अंतिम और मुख्य लाभ केवल उन्हीं चुनिंदा लोगों को ही मिलना तयशुदा है जिनके हाथों में इन ताकतों की वास्तविक बागडोर केन्द्रित है। इन्होंने धीरे-धीरे समाचार पत्रों, इलेक्ट्रानिक मीडिया को पूरी तरह दबोच लेने के बाद साहित्य पर अपने पंजे गड़ा दिये हैं। इसे समझने के लिए ज्यादा दूर जाने की जरूरत नहीं है, पिछले कुछ वर्षों की बेस्ट सेलर किताबों को उठाकर एक बार देखें तथा इनकी विषय-वस्तु और इनके द्वारा स्थापित किए जाने वाले जीवन मूल्यों, प्रतिमानों को समझने की कोशिश करें तो यह खतनाक खेल समझ में आने लगेगा।

यह केवल भारतीय साहित्य ही नहीं बल्कि विश्व साहित्य पर भी पूरी तरह लागू होता है। वास्तव में यह युग केवल जहरीले होते पर्यावरण, जलसंकट, विघटित होते समाज तथा टूटते जीवन मूल्यों का ही संकट नहीं है, बल्कि साहित्य में मौलिक तथा शाश्वत प्रतिमानों के टूटने का संकट है। यह संकट सीधे-सीधे मानव अस्तित्व से जुड़ गया है। आप मानो या न मानो पर बाजारवाद तथा भूमंडलीयकरण द्वारा रचित चक्रव्युह के वेधन की विद्या हमारे जनजातीय समाज की जीवन शैली तथा जीवन मूल्यों में ही निहित है। पर अफसोस कि उनसे प्रकृति के साथ सहज साहचर्य, न्युनतम आवश्यकताओं में जीवनयापन की जीवनशैली, उदात्त जीवन मूल्यों, सहज जीवन दर्शन आदि विधाओं को सीखने के बजाय हम उन्हें पिछड़ा मानते हुए, अपने तथाकथित विकास का बेमेल मॉडल उनके विकास के नाम पर उन पर थोप रहे हैं, हमें हर हाल में इससे उबरना ही होगा; और इसी दिशा में किए जा रहे हमारे प्रयासों का नाम है'ककसाड़'। हम अपनी इस कोशिश में कहां तक सफल हो पा रहे हैं, यह या तो इतिहास बताएगा या फिर आप। पर हमारी आशायें वर्तमान में तो आप पर ही टिकी हैं इसलिए आपसे गुजारिश है कि आप अपने विचार इमेल, पत्र, फोन जो भी आपको सुविधाजनक हो, हम तक पहुंचाने का कष्ट करें।

तो अगले अंक तक विदा!!

राजाराम त्रिपाठी
मो.: 094252-58105

साक्षात्कार

संथाल समाज की संस्कृति भारतीय संस्कृति से भी प्राचीन है

(प्रख्यात संथाली साहित्यकार और राजनीतिज्ञ **पृथ्वी मांझी** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

प्र. अपनी साहित्यिक और राजनीतिक यात्रा के बारे में कुछ बताएं?

उ. मेरी साहित्यिक यात्रा तो स्टूडेंट लाइफ से ही शुरू हो गई। मैं आसाम में पढ़ाई करता था। दुमका से एक पत्रिका निकलती थी उसमें संथाली भाषा में मेरी लिखी एक कविता छपी। तब मैं नवीं या दसवीं में रहा होऊंगा। मेरे पिताजी श्री बीरसिंग मांझी और माता श्रीमती सीता मांझी चाय बागान में मजदूर थे। हम बहुत गरीबी में रहे। पर मुझे कभी यह नहीं लगा कि मेरे पास अच्छे कपड़े या बढ़िया खाने को नहीं है। बस हमें पढ़ाई करनी थी उसके लिए मेरे माता-पिता ने हर हाल में मुझे सुविधा दिया। बी.ए. और एल.एल.बी के बाद परिस्थितियां बदलीं और मैं आसाम चाय बागान के जनजातीय विद्यार्थी संगठन का सचिव बन गया। और यहीं से राजनीतिक जीवन की शुरुआत कही जा सकती है। मैं पढ़ाई में अच्छा था हमारे जनजातीय समुदाय में पढ़ने की सुविधा भी कम थी तो यह भी एक कारण था कि मुझे हर जगह बुलाया जाता था। मुझे पढ़ने और लिखने दोनों का शौक था अतः इसी व्यस्त जीवन में साहित्य की भी सेवा करता रहा। बाद में राज्य सभा से सांसद चुना गया। आसाम विधान सभा में एम.एल.ए चुना गया। प्लानिंग एंड डेवलंपमेंट, लेबर एंड एमप्लायमेंट एंड टी-ट्रइब्स वेलफेयर विभाग का आसाम में मंत्री रहा। 2008 से 2011 तक वाटर रिर्सोस, लेबर और एमप्लायमेंट एंड टी. ट्राइब्स वेलफेयर का मंत्री रहा। 2011 में रेवेन्यु एंड डिसास्टर मैंनेजमेंट विभाग में मंत्री रहा। इस राजनीति की यात्रा के साथ मेरा लिखना-पढ़ना भी चलता रहा। मेरा असमिया भाषा में कविता संग्रह 'श्रमिक' के नाम से आया। मैंने त्रिभाषा संथाल-असमिया-अंग्रेजी में शब्दकोश तैयार किया। मेरे द्वारा जगह-जगह पर दिए गए भाषणों का संग्रह भी अंग्रेजी में आया।

साहित्य अकादमी दिल्ली में कार्यक्रम के दौरान
पृथ्वी मांझी और कुसुमलता सिंह

प्र. क्या कभी साहित्यकार मांझी और कुशल राजनीतिज्ञ मांझी में समय की कमी को लेकर या विचारों को लेकर कोई कठिनाई आई?

उ. नहीं, कभी नहीं। बल्कि दोनों एक दूसरे के पूरक रहे हैं। अगर आप में इच्छा है तो आप दोनों काम कर सकते हैं। मैं कही टूर पर रहता हूं तो भी पढ़ता रहता हूं और लिखता भी हूं।

प्र. आजकल आप क्या लिख रहे हैं?

उ. मैं संथाली भाषा में उस समय की सामजिक और आर्थिक परिस्थितियों पर लिख रहा हूं जिसके कारण बंगाल, बिहार, आसाम से लोगों को ब्रिटिश लोग मजदूरी के लिए संतालपरगना के क्षेत्र में ले आए। कोई न कोई कारण तो रहा होगा। नहीं तो अपने मूल को छोड़कर क्यों कोई दूसरी जगह आएगा आखिर क्या थीं वे परिस्थितियां?

प्र. संथाली साहित्य के बारे में अपने विचार बताएं?

उ. संथाली साहित्य के बारे में चर्चा करने से पहले मैं बताना चाहूंगा कि संथाल समाज की उत्पत्ति भारतीय संस्कृति से भी पुरानी है। संथाल समाज हड़प्पा एंव मोहनजोदड़ो के काल से ही अस्तित्व में हैं। हमारा इतिहास वीर शहीदों से भरा पड़ा है। इस इतिहास को संजोने व अपनी शिक्षा संस्कृति को बचाने में साहित्य की बहुत बड़ी भूमिका है। संथाली साहित्य या संथाली लोगों के बारे में सबसे पहले तो अंग्रेजों ने अपने नजरिए से लिखा। लेखक, विचारक और दार्शनिक पंडित रघुनाथ मुर्मु ने संथाली भाषा की लिपि 'ओल चिकी' का आविष्कार किया उसमें ही अपने

नाटकों की रचना किया तो उसके बाद संथाली साहित्य के विकास को गति मिली। मैंने भी उनके इस अभियान में संथाली भाषा के शब्दकोश की रचना करके योगदान दिया। एक बार जब लिपि निर्धारण हो गया तो चीजें आसान हो गईं। मुझे अभी भी याद है कि मैंने 2 जून 1986 को पार्लियामेंट में अपनी स्पीच में कहा कि संथाली भाषा को संविधान की आंठवीं सूची में सम्मिलित किया जाए। किसी आसाम से आए संथाली आदिवासी का संसद में यह कहना एक ऐसी खबर बनी कि उसने आंदोलन का रूप ले लिया। तब प्रिंट मीडिया का जमाना था। लोगों की आवाज गूंजी और संथाली आंठवी सूची में शामिल हुई। संथाली को नेशनल साहित्य अकादमी में पहचान मिली। अब हमारे साहित्यकारों को साहित्य अकादमी का अवार्ड दिया जाता है।

प्र. आजकल भाषा पर एक अजीब सा संकठ छाया है। लोगों ने भाषाओं को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ा है। जैसे हम यहां अंग्रेजी को ले सकते हैं कि लोग अंग्रेजी की ओर इसलिए रुझान रखते हैं कि उसे सीखने से उन्हें अच्छी नौकरी मिलेगी। लड़कियों की अच्छी शादी होगी। इसका परिणाम यह है कि अन्य जनजातीय भाषाएं लुप्त हो रही हैं। इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?

उ. सारे विश्व में भाषा को लेकर यह भ्रम बना हुआ है। पहले तो मैं यह बताना चाहूंगा कि अंग्रेजी भी आदिवासी या आदिमवासी एंजल, सैक्सन और ज्यूटॅस की मिली-जुली भाषा ही है। बाद में इसमें यानि अंग्रेजी में कुछ शब्द इटली से आए कुछ स्पेन से, कुछ यहां से कुछ वहां से। उस सबको लेकर अंग्रेजी का नया रूप बना। जहां तक अपनी मातृभाषा को छोड़ने या लुप्त होने की बात है तो उस पर यह कहूंगा कि अंग्रेजी सीखनी पड़ती है पर जो आपकी मातृ भाषा है उसे सीखना नहीं होता। उसे आप मां के गर्भ से ही सीखने लगते हैं। अंग्रेजी इंटरनेशनल है जरूर सीखें। भाषा सीखना अलग है और ज्ञान का होना अलग है। मैं आपको एक उदाहरण देकर बताना चाहूंगा कि जब मैं प्लानिंग एंड डेवलेपमेंट, लेबर एंड एमप्लायमेंट विभाग में मंत्री था तो एक लड़का फर्राटेदार अंग्रेजी बोलता मेरे पास नौकरी के लिए आया। उसे पूरा विश्वास था कि फर्राटेदार अंग्रेजी जानने और बोलने से नौकरी तो पक्की ही है। क्यों कि जनजातियों में अंग्रेजी बोलने वाले कम हैं। मैंने उससे ऐसे ही पूछा कि अच्छा यह बताओ कि इन दिनों प्लानिंग और डेवलेपमेंट विभाग का आदिवासी मूल का मंत्री कौन है? वह इधर-उधर देखने लगा। एक दो नाम भी उसने गलत लोगों के लिए। मैंने उसका उत्तर सुनकर कहा,' जब तुम्हें यह तक नहीं पता कि जिसके पास मिलने आए हो यानि कि मैं ही उस विभाग का और संथाली जनजाति मूल का आसाम में रहने वाला मंत्री हूं तो तुम्हें नौकरी क्या मिलेगी?' तो सिर्फ अंग्रेजी बोलना ही काफी नहीं कुछ ज्ञान भी विषय का होना चाहिए।

संथाल जनजाति झारखंड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और असम में फैली है। यह भारत का प्रमुख आदिवासी समूह है। हमारी विरासत अद्वितीय है। हमारे लोक गीत, लोक नृत्य, संगीत और भाषा प्रचुर यानि की धनी है। अंग्रेजों के समय में संथाली रोमन में भी लिखी जाती थी। पर 1855 के विद्रोह के बाद दृश्य बदल गया। संथाली भाषा की अपनी लिपि बनी। हमारे लोकगीत, हमारी परंपराएं, संथाली भाषा के साथ भारतीय संस्कृति को संवारती और धनी बनाती हैं।

प्र. आप उभरते साहित्यकारों और युवा लेखकों को क्या कहना चाहेंगे?

उ. हमारे यहां साहित्य सर्जन खूब हो रहा है। महिला और पुरुष दोनों संथाली में साहित्य की हर विधा में लेखन कर रहे हैं। मेरा कहना यह है कि वे संथाली भाषा और लिपि पर ही ध्यान न दें बल्कि अन्य क्षेत्रों , दूसरी भाषाओं में जो लिखा जा रहा है उस पर भी ध्यान दें। उसे पढ़ें। संथाली से अन्य भाषाओं में अनुवाद की भी चेष्टा करें। इसके साथ संथाली को शिक्षा का माध्यम बनायें । इसे भी याद रखें कि संथाल आदिमवासी द्वारा मनाए जाने वाले पर्व, रस्म-रिवाज का ही समावेश भारतीय संस्कृति में हुआ है। आदिम जनजाति के लोक साहित्य को संग्रहित करें। संथाली में अनेक लोक कथाएं हैं । उसके अनेक दृष्टिकोण हैं। जिनमें नैतिक, सामाजिक, चातुर्य आदि सभी गुणों का समावेश होता है। वह मानवीय अनुभवों पर केंदित हमारे समाज के प्रतीक रूप में हैं। युवा लेखकों और हर संथाली को चाहिए कि अपनी लोक संस्कृति पर गर्व करें।

●